विचार बिन्दु

पूरे यत्न से इतिहास की रक्षा करनी चाहिए, इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने से विनाश निश्चित है। –महाभारत

महाजनी संस्कृति के जाल में फंसी है शिक्षा व्यवस्था

विलासिता खुली अर्थव्यवस्था का एक आवश्यक अंग है। विलासिता पर लोग खर्च करते हैं उससे, मॉल सजते हैं, बाज़ार चलता है। जनसंचार के माध्यमों पर चल रहे प्रचार तंत्र के जरिये बाज़ार हमें उन चीजों पर खर्च करने को प्रेरित करता है जो वास्तव में हमारे जीवन की मूलभूत जरूरतें नहीं होतीं, विलासिता की वस्तुएं होती हैं। समाजशास्त्री मानते हैं कि पूंजीवाद और वामपंथ दोनों का अंतिम सामाजिक लक्ष्य एक ही है। वह लक्ष्य है सब तक विलासिता पहुंचाना। दोनों विचारधाराओं के रास्ते भले ही अलग-अलग हों, मगर लक्ष्य एक ही रहा है। वामपंथ के शासन में कठोर नियंत्रण से सबको बराबर विलासिता का हक़ सुनिश्चित करने के प्रयास किये गए। दूसरी तरफ पूंजीवाद भी विलासिता में सबकी बराबर भागीदारी चाहता है मगर यह बाज़ार की व्यवस्था में शासन की कम से कम दखलंदाजी तथा निजी पूंजी को सुनिश्चित करता है और लोगों की स्वतंत्ररूप से चुनने का मंत्र देता है। इन दोनों के बीच समाजवाद भी होता है जिसके समर्थक व्यक्ति की स्वतन्त्रता के साथ शासन के जरिये सामाजिक नियंत्रण पर राजी हो लेते हैं। लेकिन इक्कीसवीं सदी का यह समय ऐसा है जब विज्ञान आधारित तकनीकी बदलाव जबर्दस्त तेजी से हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है। मानव अपने इतिहास में इतनी तेजी से ऐसा बदलाव पहली बार अनुभव कर रहा है। इन्हीं बदलावों और जरूरतों के चलते हुए नई आर्थिक नीतियां आमूल परिवर्तनों की तरफदारी करती हैं। हम सहमत हों या असहमत, बदलाव को हमें स्वीकार करना पड़ेगा। इसके अलावा हमारे पास अन्य कोई चारा भी नहीं है। पूंजीवाद की बाढ़ का जो दरवाजा कांग्रेस की सरकार ने खोला था उसे बंद करना अब असंभव है। अब हर तरफ पूंजी का बोलबाला है और सभी उसी की शरण में है उसी प्रकार जैसे **बुद्धम शरणम गच्छामि!** या फिर भक्ति काल में **कृष्णम शरणम मम:।** ऐसे भारतीय मन को पहले राजा या सामंतशाही ने और बाद में हल्के वामपक्ष की ओर झुकाव लिये समाजवाद ने भी आकर्षित किया। आज़ादी के बाद सब कुछ ऊपर वाला करेगा याने सरकार करेगी के भाव ने लोकतन्त्र में भी अधिनायकवाद को नए रूप में जारी रखा। इसके नतीजे में गणतन्त्र का निर्वाचित नेतृत्व का व्यवहार सामंती और अधिनायकवादी होता चला गया।

बाज़ार आस्था को भी भुना लेना जानता है। इसे विद्यानिवास मिश्र ने महाजनी सभ्यता का इंद्रजाल कहा था। यह इंद्रजाल हमारी सनातन परम्पराओं, जो रूढ़ियां नहीं है, की शिक्षा का शमन करता है। इसके लिए वह सबसे पहले हमारे मन को हरता है। भारतीय मन पोथी वाला मन नहीं है। इसलिए यहां की मौखिक परंपरा गहरी मानवीय संवेदना की शिक्षा देती रही है। नयी पोथियों वाली शिक्षा प्रमाणपत्र देती है। वह केवल आश्वस्त भर करती है कि विद्यार्थी ने अमुक विषय की मुख्य पोथियां पढ़ ली है और उनके बारे में पूछे गए सवालों के निर्धारित जवाब औपचारिक परीक्षा में दे दिये हैं। उत्तीर्ण छात्रों को डिग्री का प्रमाणपत्र मिलता है कि उसने शिक्षा पा ली है। ऐसे प्रमाणपत्रों की शिक्षा जीवन में दूर तक साथ नहीं चलती। विस्मृत हो जाती है, क्योंकि उसका जीवन के कारोबार में कोई उपयोग नहीं होता। इसीलिए कहा जाता है कि आज के प्रमाणपत्रों वाली शिक्षा एक गहरी मानवीय मौखिक परंपरा वाली शिक्षा की पूर्ण विस्मृति की महंगी कीमत पर प्राप्त की गई है। शिक्षा अनंत जिज्ञासा, घनी आत्मीयता, और अपार करुणा का भाव देती है। ऐसी शिक्षा की व्यवस्था प्रमाणपत्र पाने की दक्षता देने वाले व्यावसायिक शिक्षण संस्थान कैसे कर सकते हैं! प्रमाणपत्र देने वाला शिक्षण अहंकार देता है। ऐसी जीत का अहंकार जो किसी भी कीमत पर हासिल की गई हो।

एक समय जब शिक्षक ने भारतीय मौखिक परंपरा को विस्मृत नहीं किया था तब उसमें गुरुत्व था। वह प्रमाणपत्रों के लिए ही नहीं जीवन के लिए भी छात्रों को तैयार करता था। मगर आज की शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थी को अपने आप से, अपने समाज से, अपने परिवेश से अजनबी बनाती है। हर समय चौकन्ना रहना सिखाती है कि कहीं कोई और उसे पीछे न छोड़ दे। महाजनी संस्कृति की शिक्षा के संस्थान दंभपूर्ण आडंबर ओढ़े रहते हैं। इसी चमक से वे सबको भरमाते हैं। वे विद्यार्थियों को यही सिखाते हैं कि प्रतियोगिता में चूक मत करना नहीं तो दौड़ से बाहर हो जाओगे। दौड़ो, दौड़ो। दौड़ते हुए जीतने के लिए भले ही साथ वाले को टंगड़ी मारनी पड़े या अपने प्रभाव से खेल के नियम बदलवा देने पड़ें, मगर जीतने की ज़िद पर अड़े रहो। इस प्रकार देखें तो देखें तो पूरी शिक्षा व्यवस्था में असफल के लिए कोई स्थान नहीं है। शासन हो, समाज हो, अभिभावक हो, या शिक्षक सभी केवल सफलता के गुण सिखाने के प्रयासों में लगे रहते हैं। ऐसे में स्वाभाविक है कि सभी सफल होना चाहते हैं। सबको लगता है कि सफलता आखिर में उनके सब ऐब छिपा देगी। आज के विद्यार्थी को यह सिखाया जा रहा है कि खेल में जीतने के लिए रैफरी को खरीदना पड़े तो वह भी जायज है क्योंकि कहीं कोई जीतने में चूक हुई नहीं कि उसकी ज़िंदगी का सुख छिन जाएगा। सभी यह कहने का पाखंड तो करते हैं कि सीखने में, आगे बढ़ने में, और सफलता पाने में असफलता आवश्यक हैं, किंतु हमें शिक्षा तो असली जिंदगी में असफलता से बचने की दी जाती है। असफलता को दंडित किया जाता है। अब तो विफलता का भूत लोगों के दिमाग पर पहले से कहीं ज्यादा हावी है। अनिश्चितताओं तथा तेजी से आ रहे परिवर्तनों ने असफलता के भूत की छाया को औरअधिक विकराल कर दिया है। असफलता हमें बुरी लगती है। हमारा दिमाग गलतियों से होने वाले परिणामों पर अधिक केंद्रित रहता है, बनिस्पत कि उसके द्वारा खोले गए अवसरों के।

आज की शिक्षा व्यवस्था मानवीयता के नैतिक दायित्वों से मुंह फेरते हुए आधारहीन और मूल्यहीन राजसत्ता में अपना वर्चस्व बनाने का लोभ भी पैदा करती है। आज की शिक्षा सत्ता में कुर्सी पाने या उसे बनाए रखने के लिए अनुष्ठान करना सिखाती है। एक ठहरा हुआ मूल्य सिखाती है।

जब जीवन की शिक्षा में सफलता ही एकमात्र सूत्र बन जाती है तब कोई कितना ही बचे उसे झूठ, फरेब और बेईमानी की राह पर चल कर सफलता पाना आसान लगने लगता है। आश्चर्य नहीं कि आज का युवा पूछता है कि मैं अगर सत्य बोलता हूं और असफल होता हूं, तो क्या करूं? बेईमानी से बचा जाय कि सफलता छोड़ी जाए, क्या किया जाए? जैसे सवालों के जवाब हमारी आज की शिक्षा में नहीं सिखाए जाते। जीवन में बार-बार असफलता मानव के मन में एक भय पैदा करती है। इसलिए वह उन परिस्थितियों से बचने का प्रयास करता है जो उसे असफलता की ओर धकेलती है। इस भय के चलते अनेक लोग अपने सपनों से दूर चले जाते हैं और हीन भावना से भर जाते हैं। जीवन के आज के ऐसे सत्य से हमारी शिक्षा निगाह फेरे हुए है उस कि ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। हम जीवन की प्रतिकूलता के खिलाफ मजबूत बनने की कोशिश करते हैं मगर हम असफलता के विषय का जिक्र ही नहीं करते, उसे भूल जाना चाहते हैं। असफलता से हम निराश महसूस करते हैं। मनोचिकित्सक कहते हैं कि हम अपने बारे मे कैसे सोचते है और दूसरे लोगों के बारे मे कैसे सोचते है इसी में सारा रहस्य छुपा है। हमारे विचार ही हमारी भावनाओं को प्रभावित करते हैं। वे कहते हैं कि किसी परेशानी की हालत में हमारे विचार हमारी भावनाओं और हमारे शारीरिक लक्षणों को प्रभावित कर सकते है।

आज की शिक्षा व्यवस्था मानवीयता के नैतिक दायित्वों से मुंह फेरते हुए आधारहीन और मूल्यहीन राजसत्ता में अपना वर्चस्व बनाने का लोभ भी पैदा करती है। आज की शिक्षा सत्ता में कुर्सी पाने या उसे बनाए रखने के लिए अनुष्ठान करना सिखाती है। एक ठहरा हुआ मूल्य सिखाती है। जबकि असली शिक्षा निरंतर जांचा जाने वाला, और जांचा जाकर निरंतर नये रूप में निखर कर उभरने वाला मूल्य सिखाती है। बहुतों को तो यहां तक लगता है कि भारत को एक कचरा फेंकू उपभोक्ता संस्कृति वाला ऐसा देश बनाने पर हमारी मौजूदा शिक्षा व्यवस्था आमादा है जहां सभी लोग बाज़ार के शिकंजे में फंसे हों। सभी पर खरीदो-खरीदो, भले ही बैंक से उधार लेकर ही खरीदो, पर खरीदो का पागलपन सर्वत्र हावी नज़र आता है। कुछ पाने की एक अजीब सी लाचारी में सभी लोग अपने को फंसा पाते हैं। ऐसे में प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाएं पास करके और प्रमाणपत्र आधारित चयन प्रक्रिया की व्यवस्था से चुने जा कर बने शिक्षकों से कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि वे तत्व ज्ञान वाली भाषा बोल या समझ सकते हैं और वैसी शिक्षा दे सकते हैं। आज की शिक्षा हमें अंध विश्वासों और घोर अकर्मण्य नियतिवाद में ही धकेलती है। यह सबको स्पष्ट दीख भी रहा है। शिक्षा जब बाज़ार का हित साधने वाली बना दी जाती है तब यही होता है। ऐसा इसे कौन बनाता है? हमारे नीति निर्माता और लोकतान्त्रिक विधि से चुने हुए जन प्रतिनिधि इन हालात के जिम्मेवार हैं। हालांकि ये जन प्रतिनिधि विधि सम्मत लोकतान्त्रिक दरवाजों से होकर सत्ता में पहुंचते हैं और नीति निर्धारक बनते हैं, परंतु उनका व्यवहार दर्शाता है कि वे सिर्फ एक ही नीति जानते हैं और वह कि किस प्रकार सत्ता पर अपना कब्जा बनाये रखना और जनहित के मुखौटों के पीछे अपने लिए और अपनों के लिए हो कर रहना और काम करना। इसलिए उन्हें ऐसी शिक्षा व्यवस्था की ही दरकार रहती है जो सबको मृग मरीचिका में भटकाए रखे ताकि दौड़ते-हांफते लोगों के पास उनसे कोई सवाल करने का समय ही न रहे। इसलिए महाजनी संस्कृति उन्हें बड़ी रास आती है। मगर भारतीय मन ऐसा नहीं है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

विश्व छायांकन दिवस पर विशेष

जड़ में चेतन की तलाश करती दृश्य-छंद कला

छायांकन विरल कला है। छायांकन दृश्य में बसे अदृश्य सौंदर्य को अंवेरने की अद्भुत कला है। छायाकार रंग, स्पेस, रेखाओं और परिवेश से जुड़ी तमाम कलात्मक संभावनाओं का एक तरह से हम सबके समक्ष आकाश खोलता है।

मुझे लगता है, छायांकन देखने को संस्कारित करने की दृश्य -छंद कला है। इस कला के अंतर्गत छायाकार चीजों, व्यक्तियों और यथार्थ से जुड़े दृश्यों में एक प्रकार से रमता है। छायांकन असल में देखे, अनुभूत किए हुए यथार्थ को अपनी मौलिक दीठ में सर्वथा नए ढंग से रूपायित करने की ही विरल कला है।

रघुराय ने इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की परन्तु भारतीय जन जीवन, प्रकृति दृष्यावलियों, युद्ध, आस्था स्थलों, स्मारकों के साथ ही राजनीतिक, सामाजिक जीवन से जुड़े विशिष्ट व्यक्तियों के उनके छायाचित्र जड़ को जीवंत करने वाले हैं। एक छायाकार की अंतर्मन अनुभूतियों के भाव को उनकी छायांकन कला संग पढ़ा ही नहीं देखा जा सकता है। रघुराय के संगीत, नृत्य, नाट्य आदि कलाओं से जुड़े कलात्मक छायाचित्रों में कलाकारों के जरिए कला के समय को भी हम सुन-गुन और बांच सकते हैं। छायाकार महेश स्वामी ने कभी नृत्य में छाया-प्रकाश से उभरती भंगिमाओं का ध्यान-लोक सिरजा था। इधर कुछ बरसों से वह कैमरे से ली पेड़-पौधों की जीवंत छवियों का कैनवस रूपान्तरण कर रहे हैं।

अविनाश पसरीचा के हिमालय के चित्र, निमाई घोष के सत्यजीत राय की सिने कला और व्यक्तित्व से जुड़े चित्र, राजदीप राकेश के लोक संवेदना से जुड़े उत्सवधर्मिता से जुड़े छायाचित्रों को देखते बहुतेरी बार यह भी लगता रहा है कि बजरिए छायाचित्र हम कला की उस प्रस्तुति समय में प्रवेश कर गये हैं।

अकबर पदमसी लिखते हैं, 'मैं चित्रकार हूं पर कई बार कैमरे से चित्रकारी करता हूं। परछाइयां रोशनी को शिल्पित करती हैं ।' यह सच है, छायांकन में परछाई में भी रोशनी से बहुत कुछ नया सिरजती है। छायाकार देखे हुए में अपनी संवेदना, घटित किसी तात्कालिकता में उपजे क्षण के सौंदर्य, दृश्य में निहित गहराई, गंभीरता या व्यक्ति या वस्तु से जुड़े किन्हीं अचरज भावों को अपने तई कैमरे की आंख से जब परोटता है, तब उसका वह कैमरे का छायांकन, कला में रूपान्तरित हो जाता है। आज ही विश्व छायांकन दिवस पर पुष्पेंद्र उपाध्याय की पहली छायाचित्र प्रदर्शनी जवाहर कला केन्द्र में हो रही है। यह देखना सुखद है कि अपने चित्रों में उन्होंने प्रकृति रचे परिवेश को अंतर के अपने उजास से शिल्पित किया है। मुझे लगता है, छायाकार प्रकृति में क्षण-क्षण में जो परिवर्तित होता है, उस सत्य का सौन्दर्यान्वेषण है, छायांकन कला।

कुछ समय पहले ही प्रख्यात कलाकार हिम्मत शाह अपनी कलाकृतियों की एक किताब 'हाई रिलीफ वर्क बाई हिम्मत शाह' स्वयं वह घर आकर देकर गए थे। उनके द्वारा 1968-69 में सेंट जेवियर स्कूल, अहमदाबाद में दीवार पर सीमेंट,

डॉ. राजेश कुमार व्यास

कंक्रीट, पत्थर और ईटों से बेहद कलात्मक म्यूरल कार्य के चितराम इसमें है। पुस्तक में छायाकार सुरेन्द्र पटेल और राघव कनेरिया ने उनके सिरजे उस समय के सुंदर भित्ति चित्र, दीवार के खंड खंड सौन्दर्य के अखंड को गहरे से जिया है। उनके उन छाया चित्रों को देखकर ही मुझे यह भी अनुभूत हुआ, यह छायांकन ही है जिसमें किसी दूसरी कला साधना को इस तरह से सदा के लिए जीवंत कर कला इतिहास की सौंदर्य सृष्टि होती है। युवा छायाकार आकाश शर्मा ने इधर गोविंद देव जी, नाथद्वारा की कृष्ण मूर्तियों के छायाचित्रों को अपने स्तर पर परस्पर एक साथ संयोजित कर डिजिटल प्रिंट के विरल प्रयोग किये हैं। इन्हे देखकर मन में विचार आते हैं, छायांकन यथार्थ के बरक्स नवीन यथार्थ रचने की कला ही क्या नहीं है! बहरहाल, प्रख्यात प्रिंट मेकर, कलाकार जयकृष्ण अग्रवाल की जवाहर कला केन्द्र में कभी जयपुर के जन्तर-मन्तर पर केन्द्रित एक छायाचित्र प्रदर्शनी देखी थी। इसमें उन्होने जंतर मंतर की सीढ़ियों, समय यंत्रों के चित्रीय तत्वों को खगोलीय घटना की अनुभूति में जीते हुए शिल्प स्थापत्य के अनंत विस्तार का अदभुत छाया चित्र रूपान्तरण किया है। मुझे लगता है, छायांकन में देखना ही महत्वपूर्ण नहीं है, उसे देखे को अपने तईं विकसित करते और फिर ऐसे को अंतर्मन अनुभूति में कैमरे के जरिए रूपांतरित करने की कला अधिक महत्वपूर्ण है।

राजा रवि वर्मा प्रात: 4 बजे उठकर चित्र बनाते थे। कहते हैं, राजा रवि वर्मा ने प्रकृति के इसी उजास और अंधकार के रंगों की अनुभूतियों को अपनी कलाकृतियों में बरतें रंगों में रूपान्तरित किया है। गौर करें, उनकी कलाकृतियों में रंग संयोजन ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। नर्मदा के अनथक यात्री अमृत लाल वेगड़ ने नर्मदा के किनारे बसे गांवों के बेहद मोहक शब्द चित्र ही अपनी यात्रा संस्मरणें में नहीं उकेरे हैं बल्कि अपने रेखांकन में भी नर्मदा यात्रा को गहरे से जिया है। छायांकन कला के बारे में जब भी विचारता हूं, 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' पुस्तक में लिखी यात्रा अनुभूति की उनकी यह पंक्तियां जहन में कौंधती है। वह लिखते हैं, '...सारा दिन मंडला की उस पहाड़ी पर रहा। वह पेपरवेट जैसी लग रही थी। आस-पास के खेत कहीं उड़ नहीं जाए, इसलिए उन पर रखा पेपरवेट।' जिस तरह से वेगड़जी यहां आंख से देखे दृश्यों को अपने मन की आंख से अनुभूतियों में रूपान्तरित कर रहे हैं, ठीक वैसे ही छायाकार भी कई बार दृश्य में ऐसे ही संवेदनाओं को घोल कर यथार्थ को देखे से इतर नवीन ढंग से रूपायित करता हमारे समक्ष रखते है। इसीलिए कहें, छायाकार जो देखता है वह कोई और नहीं देखता है।

भारतीय फिल्मों के भीष्म पिता कहे जाने वाले दादा साहब फाल्के कैमरे से सिरजी दुनिया के प्रति इतना अधिक जुनूनी थे कि उन्हें इसके लिए अपनी एक आंख तक गंवानी पड़ी थी। 'द ग्रोथ ऑफ द प्लांट' के अंतर्गत मटर बोने और उसके बाद उसके क्षण-क्षण में बढ़ते समय को उन्होंने छायांकन में अद्भुत ढंग से जिया है। फिल्मों में अभी जो 'स्पेशल इफेक्ट' हम देखते हैं, उसके जनक यही दादा साहब फाल्के ही रहे हैं। सत्यजित राय के साथ भी यही था, उन्होंने साधारण विषयों, दृश्यों के भी सूक्ष्म ब्योरों के इतने कलात्मक रूप चलचित्र में सिरजे हैं कि अचरज होता है, कैसे यह संभव हुआ होगा। काशी में कभी उन्होंने 'अपराजित' फिल्म की शूटिंग की थी। 'माई इयर्स विद अपू' में वह लिखते हैं, 'बंगाली टोला मे जाकर वहां के मकानों को ध्यान से देखा।

छायांकन कला का बड़ा सच यही है। इस कला में दृश्य से अधिक उसमें निहित और उभरती छवियों की विरलता अधिक महत्वपूर्ण होती है। आईए, विश्व छायांकन दिवस पर दृश्य छंद की इस कला के ऐसे ही मोहक छंदो में रमें। बहुत कुछ नया, अभूतपूर्व मिलेगा।

डॉ. राजेश कुमार व्यास,
संस्कृतिकर्मी, कवि, कला आलोचक

चिड़ावा के प्रदीप पुजारी ने इन्टरनैशनल बुक ऑफ रिकॉर्डस में नाम दर्ज कराया

चिड़ावा, (निसं)। रचनाकार प्रदीप पुजारी ने अपनी मौलिक रचना व हिन्दी साहित्य सेवा से सबका दिल जीत कर वर्ल्ड रिकार्ड में नाम शामिल कर एक कीर्तिमान अपने नाम किया है। प्रदीप पुजारी को इन्टरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्डस की ओर से इस बाबत मेडल व सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मान दिया

■ मौलिक रचना व हिन्दी साहित्य सेवा के लिए इन्टरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्डस में हुआ नाम दर्ज

वर्ल्ड रिकार्ड में सर्टिफिकेट के साथ प्रदीप पुजारी।

गया। फरवरी 2022 में बहुत बड़े द्विभाषीय अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक व सांस्कृतिक समूह ईवा जिन्दगी ने देश की आजादी के 75 साल पूरे होने के मौके पर आजादी विशेषांक ई-मैगजिन प्रकाशित कर एक नया और अनोखा विश्व कीर्तिमान बनाया था। इसमें विश्व के 10 देशों के 227 लेखकों व रचनाकारों ने 700 से अधिक मौलिक कविताओं, लेखों आदि के द्वारा अपना योगदान दिया गया। इसमें चिड़ावा के प्रदीप पुजारी ने भी अपनी रचना द्वारा अपना अमूल्य योगदान दिया। इसके अलावा भी वे कई बार दिवस विशेष रचनाकार के रूप में भी प्रतिष्ठा पा चुके हैं। प्रदीप पुजारी की रचनाऐं राजस्थान व उत्तरप्रदेश के समाचार पत्रों में छप चुकी हैं तथा विभिन्न ई-मैगजीन में भी इन्हें रचनाओं के लिए दिवस विशेष रचनाकार, राइटर ऑफ द डे व श्रेष्ठ रचनाकार के रूप में चुना जा चुका है। इसके साथ ही इनके द्वारा चिड़ावा के आराध्यदेव श्रीकल्याण प्रभू का चालीसा ''श्रीकल्याण-चालीसा'' भी तैयार किया जा चुका है।

होटल कासल झूमर बावड़ी का एक करोड़ 2 लाख रूपये से होगा रख रखाव

सवाई माधोपुर, (निस) । राजस्थान पर्यटन विकास निगम की होटल कैसल झूमर बावड़ी सवाई माधोपुर के जीर्णोद्धार कार्य का शुभारम्भ बुधवार को राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष धर्मेन्द्र राठौड़ ने किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा देते हुए 1 हजार

■ राजस्थान पर्यटन विकास निगम ने जारी की राशि

करोड़ रूपये बजट का प्रावधान किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य न सिर्फ होटल इण्डस्ट्रीज को आर्थिक लाभ पहुंचाना है बल्कि होटल इण्डस्ट्री में बूम भी ले करके आना है। उन्होंने कहा कि होटल कैसल झूमर बावड़ी आरटीडीसी के चुनिन्दा सम्पत्ति में से एक है जिसका 1 करोड़ 2 लाख 58 हजार रूपये की राशि से जीर्णोद्धार कर हेरिटेज रूप दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि निगम की शाही रेल गाड़ी पैलेस ऑन व्हील को भी शीघ्र ही शुरू किया जाएगा। इसके लिए निगम रेल मंत्रालय

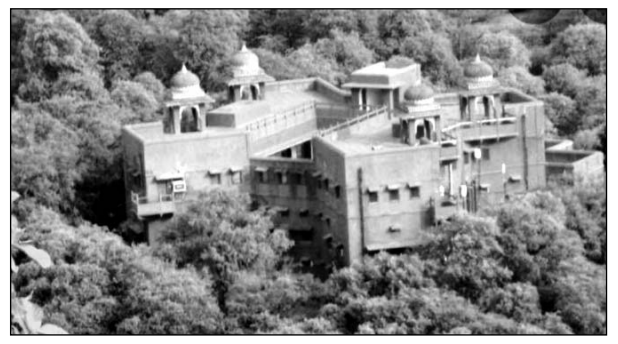

होटल कासल झूमर बावड़ी।

के साथ सम्पर्क कर चलाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे है। उन्होंने कहा कि निगम की सभी होटलों में आधारभूत सुविधाओं में सुधार के साथ इनके बेहतर मार्केटिंग एवं पब्लिसिटी भी की जाएगी ताकि निगम की आय में वृद्धि हो सके और निगम तथा इसके कर्मचारियों के सामाजिक विकास को बढ़ावा मिल सकें।

इस अवसर पर सवाई माधोपुर विधायक एवं मुख्यमंत्री सलाहकार दानिश अबरार, गंगापुर सिटी विधायक एवं मुख्यमंत्री सलाहकार रामकेश मीना, खण्डार विधायक अशोक बैरवा, प्रबन्धक निदेशक आरटीडीसी विजय पाल सिंह, जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला, जिला पुलिस अधीक्षक सुनील कुमार विश्नोई, नगर परिषद सभापति विमल चन्द महावर, सहायक निदेशक पर्यटन मधुसूदन सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे। झूमर बावड़ी में रूफ ट्रीटमेन्ट, मरम्मत, रिपेनटिंग, सभी कमरों की रिपेयरिंग और पेंटिंग, किचन और पेन्ट्री रिनोवेशन, सभी कमरों में नई एलईडी टीवी, सभी कमरों, किचन की रिवाईरिंग, सभी कमरों में ए.सी. एवं उद्यानिकी कार्य आदि किए जाएंगे।

''अस्पर्शयता के विरुद्ध 1849 में शुरू लड़ाई अभी मुक्म्मल मुकाम पर नहीं पहुंची

देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है किन्तु राजस्थान के जालोर जिले में जातिवादी मानसिकता से ग्रसित एक अध्यापक ने, उसके मटके से पानी पीने पर, तीसरी कक्षा के दलित छात्र, 8 वर्षीय इंद्र कुमार मेघवाल की इतनी बर्बरता से पिटाई की कि 24 दिन के इलाज के बाद भी छात्र के जीवन को नहीं बचाया जा सका। मां सरस्वती के पवित्र प्रांगण में छात्र की पिटाई से मौत होने की घटना दुर्भाग्यपूर्ण एवं निंदनीय है। राज्य में शिक्षण संस्थानों में कभी छात्राओं से रेप तो कभी विद्यार्थी के साथ मारपीट होना विद्यार्थियों की सुरक्षा पर सवालिया निशान है।

सबसे हास्यस्पद बात तो यह है कि इतनी विभत्स घटना पर, जब तक छात्र की मौत नही हुई, तब तक सरकार के शीर्ष, मंत्रियों व कलेक्टर, एस.पी. की व तथाखित लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ की नींद तक नहीं टूटी-भर्त्सना का एक शब्द सुन ने को नहीं मिला। अगर पीटने वाला अध्यापक छैल सिंह न होकर छेलुखान होता तो सारे गोदी मीडिया को नई खुराक मिल चुकी होती, प्राइम टाइम में यही मुद्दा कनफोड़ कर्कश बहस का सबसे बड़ा मुद्दा होता।

अब भी सरकार के हवाले से खबर है-- ऐसी घटनाएं देश भर में होती रहती है। हम निंदा करते है-न्याय सुनिश्चित करेंगे। नेता किसी पार्टी के हो, ऐसी घटनाओं पर यह रटी-रटाई प्रतिक्रिया होती है। जिले के एसपी के हवाले से, तो, एक दैनिक अखबार में खबर छपी है कि अभी मटकी की पुष्टि नहीं हुई-स्कूल टीचर्स, विद्यार्थी कह रहे है ऐसी कोई मटकी नही थी!!!! 24 दिन और यह जांच!! यदि किसी नेतानांगले के बेटे के साथ यह हुआ होता तो क्या जांच ऐसे ही चलती??? वैसे यह खबर अभी निकली नहीं है कि एफआईआर कब दायर की गई।क्या आप को लगता है कि जांच सही ढंग से होगी और दोषी को सजा मिलेगी???

महावीर सिंह

असली धर्म है - ब्रह्म जिज्ञासा, सत्यमेव जयते, अहिंसा परमो धर्म: और वसुधैव कुटुंबकम किन्तु उसके सड़े गले रूप की कोख से पैदा हुई है अस्पर्शयता। सदियों से चली आ रही, इस कुप्रथा के खिलाफ आवाज, 1848 से, मुख्यत: बंगाल से उठी और फिर सारे देश में फैली।1950 में भारत का संविधान लागू होने पर ऐसा लगा की यह लड़ाई अपने सही मुकाम पर पहुंच

■ आजादी के इस दौर मे भी दलित को पानी की कीमत मौत से चुकानी पड़ेगी???

गई। संविधान की धारा 17 में किसी भी प्रकार की अश्पृश्यता को गैक़ानूनी और प्रतिबंधित कर दिया गया। 1955 में संसद नें कठोर, आपराधिक प्रावधानों वाला अस्पर्शयता निषेध कानून बना दिया। किन्तु शीर्ष पर बैठे लोगों की स्वीकारोक्ति है कि ऐसी घटनाएं देश भर में होती रहती है--क्या एक घटना को दूसरी घटनाओं की आड़ में गम्भीरता से नहीं लिया जाए। सदियों की जाती वादी छुआछूत वाली मानसिकता अभी भी विकराल रूप में जिंदा है।

यह बच्चा, जागृत लोगों से, दलित कौम से व पूरे समाज से तथा निकम्मे हुक्मरानों से पूछ रहा है उसका कसूर क्या था? पानी ही तो पिया था। इतना गहरा है जातीय विद्वेष, मटका उसके छूने से अपवित्र हो गया। हो गया था तो मटका फोड़ देता, उसके पैसे ले लेते, बच्चे को स्कूल से निकाल देते,किन्तु मारा क्यों?

जिसे भगवान माना वह राक्षस क्यों बना ??? आजादी के इस दौर मे भी दलित को पानी की कीमत मौत से चुकानी पड़ेगी???

सरकारों के पास भारत की सभी समस्याओं का एक समाधान होता है, सख्त कानून बनाएंगे। कानून तो बहुत बने हुए है, लागू करते वक्त तेरा-मेरा सामने आता है, सख्त कानून धरा रह जाता है। यह सब राजनीतिक संरक्षण में ही होता है। सब जानते है, हुक्मरान जानबूझ कर भोलेपन का स्वांग करते हैं, यह कह कर की कानून सब के लिए समान है, कानून अपना काम करेगा।

–महावीर सिंह,
(पूर्व आईएएस)

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 18 अगस्त, 2022

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, भरणी नक्षत्र रात्रि 11:35 तक, वृद्धि योग रात्रि 8:41 तक, विष्टि करण प्रात: 8:53 तक, चन्द्रमा मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग रात्रि 11:35 तक है। ज्वालामुखी योग रात्रि 11:35 से आरम्भ होगा। आज भद्रा प्रात: 8:35 तक रहेगी। आज थदड़ी पर्व और स्मार्त श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत, श्री कृष्ण जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:40 तक, चर 10:54 से 12:31 तक, लाभ-अमृत 12:31 से 3:44 तक, शुभ 5:21 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:03, सूर्यास्त 6:58

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह
नवीन कार्यों में में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
घर-परिवार में वाद-विवाद बढ़ने का भय बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।